# भारत के प्रमुख राष्ट्रीय दल

## Polity

## By : Karan Sir

# भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 28 दिसंबर, 1885 को बंबई में हुई थी।
- अपनी स्थापना के समय यह मूलत: बौद्धिक वर्गों का एक संगठन था।
- वर्ष 1920 के बाद औपचारिक रूप में कांग्रेस का विकास एक संगठित दल के रूप में हुआ था।

## वैचारिक आधार

- ➢ कांग्रेस मूलत: एक मध्यममार्गी पार्टी है अर्थात् न वामपंथी और न दक्षिणपंथी है। इसके द्वारा समाज के सभी वर्गों के लोगों को सम्मिलित करने का प्रयास किया जाता है।
- ➢ यह पार्टी लोकतंत्र, राष्ट्रीय एकता, धर्मनिरपेक्षता आदि का समर्थन करती है। यह नई आर्थिक नीतियों की समर्थक है।

# नेहरू युग और कांग्रेस

- स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद से लेकर जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु (1964) तक कांग्रेस पार्टी में जवाहरलाल नेहरू का ही वर्चस्व कायम रहा।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् वर्ष 1967 तक भारतीय दलीय प्रणाली को कांग्रेस व्यवस्था भी कहा गया है, क्योंकि 1967 तक केंद्र और राज्य दोनों में कांग्रेस का ही वर्चस्व था।
- स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस की प्रकृति एक छाताधारी दल के रूप में थी। रजनी कोठारी के अनुसार भारत में कांग्रेस के विघटन से ही अनेक दलों का निर्माण हुआ है।
- 'The congress System' (कांग्रेस व्यवस्था) शब्द का प्रयोग रजनी कोठारी ने किया है।
- मोरिस जोंस ने भारतीय दल प्रणाली को 'एकदलीय प्रभुत्व प्रधान प्रणाली' कहा है।

# कामराज योजना ( 1963 )

- कामराज ने 1960 के दशक में महसूस किया कि कांग्रेस की लोकप्रियता कम हो रही है। इन्होंने सुझाव दिया कि पार्टी के बड़े नेता सरकार में अपने पदों से इस्तीफा दे दें और अपनी ऊर्जा कांग्रेस में नई जान फूँकने के लिये लगाएँ।
- इस योजना के तहत उन्होंने स्वयं भी इस्तीफा दिया और लाल बहादुर शास्त्री, जगजीवन राम, मोरारजी देसाई तथा एस.के. पाटिल जैसे नेताओं ने भी सरकारी पद त्याग दिये।

# 1967 के बाद कांग्रेस

- वर्ष 1967 में भारतीय दलीय प्रणाली में एक बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ तथा पहली बार नौ राज्यों में गैर-कांग्रेसी सरकार का निर्माण हुआ। इस प्रकार राज्यों में कांग्रेस का एकदलीय प्रभुत्व समाप्त हो गया तथा भारत में प्रतिस्पर्द्धी दलीय प्रणाली का विकास हुआ।
- वर्ष 1967 में चौथा आम चुनाव हुआ जसमें कांग्रेस ने केंद्र में फिर सरकार तो बनाई लेकिन उसका प्रदर्शन पहले की अपेक्षा खराब रहा। कांग्रेस ने 40.78% प्रतिशत वोट के साथ 283 सीटों पर विजय प्राप्त की।
- 1967 के चुनाव के बाद पुनः इंदिरा गांधी भारत की प्रधानमंत्री बनी।
- वर्ष 1969 में राष्ट्रपति चुनाव के दौरान सिंडिकेट और इंदिरा गांधी के बीच बढ़ते मतभेद सामने आए और फिर कांग्रेस का विभाजन हो गया।

# 1970 और 1980 के दशक में कांग्रेस

- 1971 के चुनाव में जीत के साथ इंदिरा गांधी ने फिर से अपनी सरकार बनाई। कालांतर में इलाहाबाद हाइकोर्ट ने इंदिरा गांधी के निर्वाचन को अवैध ठहरा दिया। इस पर इंदिरा गांधी ने इस्तीफा देने की बजाय देश में आपातकाल लगा दिया जिससे कांग्रेस पार्टी की छवि धूमिल होने लगी।
- वर्ष 1977 में पहली बार केंद्र में मोरारजी देसाई के नेतृत्व में गैर-कांग्रेसी सरकार का गठन हुआ। कुछ विचारकों ने इसे भारतीय दलीय व्यवस्था में द्विदलीय प्रणाली के आगमन का संकेत माना।
- जनता दल में आपसी फूट के कारण 1980 के चुनाव में जीत हासिल कर कांग्रेस ने केंद्र में सरकार बनाई।

- 1980 के चुनाव में कांग्रेस पार्टी का प्रसिद्ध नारा था- कांग्रेस ही शासन चलाने का स्वाभाविक दल है।
- 1980 के चुनाव में कांग्रेस की जीत के बावजूद राज्यों में गैर-कांग्रेसी या क्षेत्रीय दलों का प्रभाव कम नहीं हुआ था। वस्तुतः 1980 का दशक क्षेत्रीय दलों के उभार का दूसरा चरण माना जाता है।
- वर्ष 1984 के चुनाव में कांग्रेस ने पुनः राजीव गांधी के नेतृत्व में ऐतिहासिक जीत हासिल की।
- वर्ष 1989 के चुनाव में दूसरी बार गैर-कांग्रेसी सरकार की स्थापना हुई अर्थात विश्वनाथ प्रताप सिंह को नेतृत्व में राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार का गठन हुआ। यद्यपि इस चुनाव में कांग्रेस सबसे बड़े दल के रूप में थी लेकिन कांग्रेस ने सरकार से बनाने से इनकार कर दिया।

# 1990 का दशक और कांग्रेस

- 1990 के दशक में भारतीय राजनीति में मंडल और मंदिर की राजनीति काफी प्रभावी हो चुकी थी। इस दौरान हिंदी भाषी क्षेत्रों में कांग्रेस का जनाधार कम होने लगा।
- अब राजनीति में पिछड़ी जातियों के नेताओं ने अपना प्रभुत्व स्थापित किया। मुलायम सिंह यादव, लालू प्रसाद यादव, शरद यादव जैसे नेताओं ने पिछड़ी जातियों को प्रभावी रूप से लामबंद किया। साथ ही मायावती के नेतृत्व में बसपा ने भी अपना प्रभाव बढ़ाया।

- मंदिर आंदोलन के माध्यम से भाजपा ने भी अपना जनाधार बढ़ाया। इन सबका परिणाम यह हुआ कि कांग्रेस का जनाधार कम होने लगा।
- यद्यपि 1991 से 1996 तक केंद्र में कांग्रेस पार्टी की ही सरकार थी लेकिन अब कांग्रेस पर नेहरू-गांधी परिवार का प्रभाव नहीं था।
- वर्ष 1990 के दशक के अंत में सोनिया गांधी ने कांग्रेस का नेतृत्व संभाला तथा कांग्रेस में जान फूंकी।

# 2000 के बाद कांग्रेस

- वर्ष 2003 के शिमला घोषणा-पत्र में कांग्रेस की रणनीति में परिवर्तन देखा गया। कांग्रेस ने पहली बार स्वीकार किया कि वह समान विचारधारा वाले दलों के साथ गठबंधन सरकार का निर्माण करेगी।
- वर्ष 2004 के लोकसभा चुनाव में पहली बार कांग्रेस ने संघ सरकार में किसी गठबंधन सरकार (यू.पी.ए.) का नेतृत्व किया। इस चुनाव में कांग्रेस को केवल 145 सीटें प्राप्त हुई तथा वह सबसे बड़े दल के रूप में उभरी। पुन: 2009 के आम चुनाव में कांग्रेस पार्टी 206 सीट जीतकर सबसे बड़े दल के रूप में उभरी।
- वर्ष 2014 के चुनाव में कांग्रेस का प्रदर्शन अब तक का सबसे खराब प्रदर्शन रहा। इस चुनाव में कांग्रेस को मात्र 44 सीटें प्राप्त हुई, जबकि 17वें लोकसभा चुनाव (2019) में कांग्रेस ने मात्र 52 सीटें जीती थी।

# कांग्रेस का चुनाव चिह्न

- नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी का चुनाव चिह्न दो बैलों की जोड़ी था।
- 1969 में कांग्रेस के विभाजन के बाद कामराज के नेतृत्व वाली पुरानी कांग्रेस को 'तिरंगे में चरखा' और इंदिरा गांधी की नई कांग्रेस को 'गाय और बछड़े' का चुनाव चिह्न मिला था।
- 1977 में आपातकाल खत्म होने के बाद चुनव आयोग ने गाय और बछड़े के चिह्न को भी ज़ब्त कर लिया था।
- वर्तमान में कांग्रेस पार्टी का चुनाव चिह्न 'हाथ का पंजा' है।

# भारतीय जनता पार्टी ( भाजपा )

## राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा जनसंघ

- वर्ष 1925 में केशव बलिराम हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की थी।
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ( आर.एस.एस. ) के अनुसार भारत प्रारंभ से ही राष्ट्र रहा है। इसका मूल उद्देश्य हिंदू राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की स्थापना करना है।
- एम.एस. गोलवकर के अनुसार, राष्ट्र का तात्पर्य सिंधु नदी से इस ओर बसे भौगोलिक क्षेत्र के लोगों से है। इनके अनुसार हिन्दुओं के लिये भारत पितृभूमि और पूण्यभूमि दोनों है। जबकि इस्लाम और ईसाई धर्मावलंबियों के लिये भारत पूण्यभूमि नहीं है इसीलिये भारत में अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक के समान अधिकार की मांग नहीं कर सकते।

- 21 अक्तूबर, 1951 को दिल्ली में भारतीय जनसंघ का राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ जिसमें डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता में अखिल भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई।
- भारतीय जनसंघ ने वर्ष 1953 में कश्मीर और राष्ट्रीय एकता के मसले पर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में आंदोलन आरंभ किया तथा कश्मीर को विशेष अनुदान देने का विरोध किया।

# जनसंघ का राजनीतिक प्रदर्शन

- भारतीय संसद के लिये 1951-52 में हुए आम चुनावों में भारतीय जनसंघ ने तीन सीटें जीतीं।
- 1957 के लोसभा चुनाव में भारतीय जनसंघ ने 4 सीटें जीतीं तथा मतदान प्रतिशत भी लगभग दोगुना होकर 5.93 प्रतिशत हो गया। जबकि 1962 के चुनाव में भारतीय जनसंघ ने 14 सीटें जीतीं।
- वर्ष 1967 में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और हरियाणा में हुए चुनाव में भारतीय जनसंघ देश की दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। लोकसभा चुनाव में 35 सीटें प्राप्त कीं। 1971 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनसंघ ने 22 सीटें जीतीं।
- आपातकाल के बाद 1977 में भारतीय जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हो गया।

# भाजपा की स्थापना

- जनता पार्टी आपसी स्पर्द्धा की शिकार हो गई। वर्चस्व की लड़ाई में भारतीय जनसंघ के कार्यकर्त्ताओं के खिलाफ दोहरी सदस्यता का मुद्दा उठाया गया। जनसंघ के लोग या तो जनता पार्टी छोड़े या फिर संघ से अपने रिश्ते समाप्त करें। इस मुद्दे पर जनसंघ के नेताओं ने जनता पार्टी छोड़ दी तथा 6 अप्रैल, 1980 को दिल्ली के कोटला मैदान में पंच निष्ठाओं के आधार पर भारतीय जनता पार्टी का गठन हुआ।
- भारतीय जनता पार्टी के प्रथम अध्यक्ष 'अटल बिहारी वाजपेयी' थे।
- इसका चुनाव चिह्न कमल का फूल है।

# भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ( मार्क्सवादी ) [ सीपीआई ( एम ) ]

- सीपीआई ( एम ) का गठन 31 अक्तूबर से 7 नवंबर, 1964 तक कलकत्ता में आयोजित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं कांग्रेस में हुआ था।
- इस पार्टी का जन्म अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कम्युनिस्ट आंदोलन में संशोधनवाद और संप्रदायवाद के खिलाफ संघर्ष में तथा राष्ट्रीय स्तर पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद के वैज्ञानिक और क्रांतिकारी सिद्धांतों की रक्षा करने तथा भारतीय परिस्थितियों में इसके उपयुक्त अनुप्रयोग के लिये हुआ था।
- इनके नेता प्रमोद दास गुप्ता, ज्योति बसु, ए.के. गोपालन तथा पी. राममूर्ति थे।

- इस दल का प्रभाव मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल, केरल व त्रिपुरा में रहा है।
- सीपीआई (एम) को मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) भी कहा जाता है।
- वर्ष 1971 के मध्यावधि चुनाव में माकपा ने लोकसभा की कुल 25 सीटें जीतीं।
- वर्ष 2019 में हुए 17वें लोकसभा चुनाव में माकपा को मात्र 3 सीटों पर विजय मिली।

# साम्यवादी दल

- साम्यवादी दल के उग्रपंथी गुट ने क्रांति के संवैधानिक मार्ग को अस्वीकृत कर दिया जिस कारण वर्ष 1964 में साम्यवादी दल का विभाजन हो गया तथा एक नए दल सी.पी.आई. ( एम ) का गठन हुआ।
- पश्चिम बंगाल के किसानों के क्रांतिकारी आंदोलन को हल करने को लेकर सी.पी.आई ( एम.एल ) अस्तित्व में आया।
- वर्ष 1989 में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार तथा 1996 में संयुक्त मोर्चा सरकार को वामपंथियों ने अपना समर्थन दिया।

- 2004 के लोकसभा चुनाव में वामपंथियों को 1990 के पश्चात् सर्वाधिक सफलता प्राप्त हुई तथा कुल 64 सीटें जीतीं, लेकिन उसके बाद देश के आम चुनाव के प्रदर्शन में निरंतर गिरावट आ रही है।
- अप्रैल 2023 में सी.पी.आई. का राष्ट्रीय दल का दर्जा समाप्त कर दिया गया।
- कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया ने भारत में पहली बार केरल में सरकार बनाई।

# बहुजन समाज पार्टी ( बसपा )

- बहुजन समाज पार्टी की स्थापना 14 अप्रैल, 1984 को कांशीराम ने की थी। वर्तमान में इसकी प्रमुख मायावती हैं। इस पार्टी का चुनाव चिह्न हाथी है।
- उत्तर प्रदेश में इस पार्टी ने चार बार सरकार बनाई है तथा मायावती उत्तर प्रदेश की चार बार मुख्यमंत्री बनी हैं।
- इस पार्टी का मुख्य लक्ष्य समाज में उपेक्षित समुदाय तथा बहुजन समाज को सशक्त बनाना है।
- वर्ष 2019 में हुए 17वें लोकसभा चुनाव में बसपा ने 10 सीटों पर विजय प्राप्त की।

# नेशनल पीपल्स पार्टी (NPP)

- इस पार्टी की स्थापना 2013 में हुई थी तथा इसका चुनाव चिह्न किताब है। इसकी स्थापना पी.ए. संगमा ने की थी।
- यह पूर्वोत्तर क्षेत्र की पहली पार्टी है जिसे राष्ट्रीय दल का दर्जा प्राप्त है।

# आम आदमी पार्टी (AAP)

- आम आदमी पार्टी की स्थापना अन्ना हजारे आंदोलन (2011) बाद 2 अक्तूबर, 2012 को हुई थी।
- इसके संयोजक अरविंद केजरीवाल हैं जो भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन के प्रमुख चेहरे के रूप में उभरकर आए थे।
- यह अन्य दलों से भिन्न है, क्योंकि यह किसी विचारधारा पर अधारित नहीं है तथा यह किसी सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन को प्रतिबंधित नहीं करती है।
- आम आदमी पार्टी ने 2013, 2015 तथा 2020 में दिल्ली में सरकार बनाई तथा 2014 व 2019 के लोकसभा चुनावों में क्रमशः 4 तथा 1 सीट जीती।

# भारत के प्रमुख राष्ट्रीय दल

## राजनीतिक दलों के गठन का कालानुक्रम

| राजनीतिक दल | वर्ष | राजनीतिक दल | वर्ष |
|---|---|---|---|
| भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई.एन.सी) | 1885 | केरल कांग्रेस (एम) | 1979 |
| शिरोमणि अकाली दल (एस.ए.डी.) | 1920 | भारतीय जनता पार्टी (बी.जे.पी.) | 1980 |
| भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.आई) | 1925 | तेलुगू देशम पार्टी (टी.डी.पी.) | 1982 |
| जम्मू एवं कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस (जेके एनसी) | 1939 | बहुजन समाज पार्टी (बी.एस.पी.) | 1984 |
| ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक | 1939 | असम गण परिषद् (ए.जी.पी.) | 1985 |
| रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी (आर.एस.पी.) | 1940 | समाजवादी पार्टी (एस.पी.) | 1992 |
| इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग (आई.यू.एम.एल.) | 1948 | सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट (एस.डी.एफ.) | 1993 |
| द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डी.एम.के.) | 1949 | राष्ट्रीय लोक दल (आर.एल.डी.) | 1996 |
| मिजो नेशनल फ्रंट (एम.एन.एफ.) | 1961 | जोरम नेशनलिस्ट पार्टी | 1997 |
| महाराष्ट्रवादी गोमंतक पार्टी (एम.जी.पी.) | 1963 | राष्ट्रीय जनता दल (आर.जे.डी) | 1997 |
| भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) (सी.पी.आई.एम) | 1964 | बीजू जनता दल (बी.जे.डी.) | 1997 |
| शिवसेना | 1966 | ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस (ए.आई.टी.सी.) | 1998 |
| मिजोरम पीपल्स कॉन्फ्रेंस (एम.पी.सी.) | 1975 | इंडियन नेशनल लोकदल (आई.एन.एल.डी.) | 1998 |
| झारखंड मुक्ति मोर्चा (जे.एम.एम.) | 1972 | | |
| ऑल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (ए.आई.ए.डी.एम.के.) | 1972 | | |

# भारत में दलों का वर्गीकरण

## राष्ट्रीय दल

- कांग्रेस
- भाजपा
- सीपीआई ( एम )
- बीएसपी
- नेशनल पीपल्स पार्टी
- आप

## क्षेत्रीय दल

- शिरोमणि अकाली दल
- डीएमके एवं एआईएडीएमके
- शिवसेना
- तेलुगू देशम पार्टी
- रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया
- असम गण परिषद्
- हरियाणा कांग्रेस

# भारत में दलों का वर्गीकरण

## स्थानीय एवं साम्यवादी दल

- झारखंड मुक्ति मोर्चा
- मिज़ो राष्ट्रीय फ्रंट
- गोरखा लीग
- मणिपुर पीपल्स पार्टी
- अरुणाचल कांग्रेस आदि।

## तदर्थ दल

- केरल कांग्रेस
- बंगाल कांग्रेस
- लोक शक्ति पार्टी
- राष्ट्रीय लोक दल आदि।

## लघु दल

- हिंदू महासभा
- जनता पार्टी
- प्रजा समाजवादी पार्टी आदि।

# राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा कैसे मिलता है और क्या फायदा होता है?

## राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा कैसे मिलता है?

- दरअसल इसके लिए केंद्रीय चुनाव आयोग के नियम 1968 का पालन किया जाता है। जिसके मुताबिक किसी पार्टी को राष्ट्रीय दल का दर्जा हासिल करने के लिए चार या उससे ज्यादा राज्यों में लोकसभा चुनाव या विधानसभा चुनाव लड़ना होता है।
- इसके साथ ही इन चुनावों में उस पार्टी को कम से कम छह प्रतिशत वोट हासिल करने होते हैं।
- इसके अलावा उस पार्टी के कम से कम चार उम्मीदवार किसी राज्य या राज्यों से सांसद चुने जाएं या वह पार्टी कम से कम चार राज्यों में क्षेत्रीय पार्टी होने का दर्जा हासिल कर लें या वह पार्टी लोकसभा की कुल सीटों में से कम से कम दो प्रतिशत सीटें जीत जाए। वह जीते हुए उम्मीदवार तीन राज्यों से होने चाहिए।

## चुनाव चिह्न

- राष्ट्रीय पार्टी को पूरे देश में एक चुनाव चिह्न पर चुनाव लड़ने का मौका मिलता है। वह चुनाव चिह्न किसी भी दूसरे दल को नहीं दिया जाता।
- अगर किसी राज्य में राष्ट्रीय पार्टी चुनाव लड़ रही है और वहां कोई क्षेत्रीय दल उसी पार्टी के चुनाव चिह्न के साथ चुनावी मैदान में उतरता है तो, ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय पार्टी को वरीयता दी जाती है।
- इस बात को एक उदाहरण के तौर पर समझिए। समाजवादी पार्टी का चुनाव चिह्न साइकिल है। वहीं आंध्र प्रदेश की तेलुगू देशम पार्टी का चुनाव चिह्न भी साइकिल है।
- ऐसे में अगर दोनों राज्यों को राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा मिलता है, तो उस पार्टी को वरीयता मिलेगी जिसे पहले राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा मिला था।

# दूरदर्शन पर मुफ्त में विज्ञापन का समय

- चुनाव के वक्त राष्ट्रीय पार्टियों को पब्लिक ब्रॉडकास्टर यानी दूरदर्शन के टीवी चौनल पर मुफ्त में चुनाव प्रचार करने का समय दिया जाता है।
- अलग-अलग पार्टियों को अलग-अलग समय दिया जाता है। स्टेट पार्टियों को भी चुनाव प्रचार का समय दिया जाता है, लेकिन राष्ट्रीय पार्टियों को इसमें वरीयता मिलती है।

# स्टार प्रचारक के खर्च

- चुनाव आयोग की तरफ से चुनाव में खर्च की एक सीमा तय की जाती है। सभी उम्मीदवारों को अपने खर्चों की जानकारी चुनाव आयोग को देनी होती है।
- सभी पार्टियों में चुनाव प्रचार के लिए कुछ स्टार प्रचारक भी होते हैं। जब वो किसी क्षेत्र में प्रचार के लिए जाते हैं तो वहां का चुनावी खर्च निश्चितरूप से बढ़ जाता है।
- ऐसे में इस बढ़े हुए खर्च को राष्ट्रीय पार्टी चुनावी खर्च से अलग कर सकती है।
- हर राष्ट्रीय पार्टी 40 स्टार प्रचारक तय कर सकती है।
- इसके साथ ही राष्ट्रीय पार्टियों को सरकार की तरफ से दफ्तर बनाने के लिए जमीन मुहैया करवाई जाती है।